International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2023; 9(12): 223-229
www.allresearchjournal.com
Received: 09-11-2023
Accepted: 18-12-2023

Ravi Pratap Singh
Research Scholar,
Sunrise University,
Alwar, Rajasthan, India

Dr. Shweta Singh
Associate Professor,
Sunrise University,
Alwar, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Ravi Pratap Singh
Research Scholar,
Sunrise University,
Alwar, Rajasthan, India

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दार्शनिक विचारों का अध्ययन।

Ravi Pratap Singh and Dr. Shweta Singh

सारांश
यह शोध पेपर स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दार्शनिक विचारों के अध्ययन पर केंद्रित है। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन के दौरान शिक्षा को एक माध्यम के रूप में देखा और उसे व्यक्तिगत विकास का माध्यम माना। उन्होंने शिक्षा को एक समाज के समृद्धि और समानता के ओर अग्रसर करने का साधन माना। इस शोध पेपर में, हम स्वामी विवेकानंद के विचारों के विश्लेषण के माध्यम से उनके शैक्षिक दार्शनिक विचारों को समझने का प्रयास करते हैं। उनकी शिक्षा दर्शन में योगदान का मुख्य आधार व्यक्तिगत विकास और सामाजिक समानता पर ध्यान देना था। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दार्शनिक विचारों का अध्ययन हमें उनके सोचने के तरीके को समझने में मदद करता है और हमें उनकी दृष्टिकोण को आज के समय में शिक्षा के क्षेत्र में लागू करने के लिए प्रेरित करता है।

कूटशब्द : शिक्षा, योगदान, शैक्षिक, दार्शनिक, व्यक्तिगत

प्रस्तावना

विवेकानन्द की ईश्वर की अनुभूति बिल्कुल मनुष्य के समान है। वस्तुतः मनुष्य ही वह सर्वाधिक पसंदीदा ग्रन्थ है जिसे विवेकानन्द जीवन भर पढ़ना चाहते हैं। दोनों द्रष्टाओं, विवेकानन्द और मार्क्स के लिए, मनुष्य ही हर चीज़ का माप है; विवेकानन्द का मानना है कि मनुष्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है और 'शिव' के साथ 'जीव' के उनके समीकरण की इस सरल उदात्तता का अर्थ है, प्रत्येक संवेदनशील प्राणी का ईश्वरत्व के साथ।

अब प्रश्न यह उठता है कि विवेकानन्द की 'मानव-निर्माण' अवधारणा का वह स्वयंसिद्ध पहलू क्या है जिस पर उनका संपूर्ण शिक्षा दर्शन खड़ा है? मनुष्य के बारे में विवेकानन्द की अवधारणा है: "मनुष्य सभी चीजों का प्रतीक है

और सारा ज्ञान उसी में है।" मनुष्य के भीतर अनंत शक्ति है॥ (विवेकानंद, 1989, खंड 8, पृष्ठ 216)। साथ ही ऐसा मनुष्य पशुत्व, मानवता और देवत्व का मिश्रण होता है। अतः पशुता के जंगल को मानवता के मंदिर में परिवर्तित करना शिक्षा का परम कर्तव्य है। मनुष्य का स्वयं से स्वयं की ओर प्रगतिशील उत्थान के अर्थ में मनुष्य-निर्माण, उनकी दृष्टि का केंद्रीय जोर था। "अच्छा बनना और अच्छा करना - यही पूरी शिक्षा है" (विवेकानंद, 1989, खंड 6, पृष्ठ 245)। एल्डस हक्सले ने अपने उत्कृष्ट कार्य 'एंड्स एंड मीन्स' में इस बात पर अफसोस जताया है कि हमारे शैक्षणिक संस्थानों में "एकीकरण का कोई सिद्धांत नहीं दिया जाता है। व्यापक संश्लेषण उत्पन्न करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है......." (हक्सले, 1937, पृ.37)। विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षा की एक ऐसी व्यापक अवधारणा को जन्म देता है, जिसे "प्रो-एक्टिव एनलाइटेनमेंट" कहा जाता है, जो निरंतर प्रेम और संघर्ष की द्वंद्वात्मकता की ओर उन्मुख होगी: संश्लेषण और सद्भाव के लिए प्यार, और सभी प्रतिकूलताओं के खिलाफ संघर्ष। अंधविश्वास, शोषण, अभाव आदि और स्वयं की आंतरिक आध्यात्मिक कमियों के खिलाफ भी। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालना चाहता है कि शिक्षा न केवल व्यावसायिक विषयों से संबंधित होनी चाहिए, बल्कि वैचारिक क्षितिज, समन्वयवादी विकास, अंतर-धार्मिक सद्भाव, जमीनी स्तर पर वेदांतिक आध्यात्मिकता के अनुप्रयोग, विज्ञान के नैतिक अनुप्रयोग जैसे दूरदर्शी विषयों से भी संबंधित होनी चाहिए। प्रौद्योगिकी और हठधर्मी धर्मशास्त्र, विषैले धर्मतंत्र, निरंकुशता, गहरी जड़ें जमा चुके भ्रष्टाचार आदि जैसे अधर्म-विरोधी कारकों का दृढ़ विरोध भी। मानव-निर्माण के दर्शन की खोज में, विवेकानन्द ऐसे व्यक्ति को चाहते हैं - जिसका हृदय दुनिया के दुखों और दुखों को तीव्रता से महसूस करता हो। और (हम चाहते हैं) वह आदमी जो न केवल महसूस कर सकता है बल्कि चीजों का अर्थ भी ढूंढ सकता है, जो प्रकृति और समझ के मर्म में गहराई से उतरता है। (हम चाहते हैं) वह आदमी जो वहाँ भी न रुके, (बल्कि) जो काम (वास्तविक कर्मों द्वारा भावना और अर्थ) करना चाहता है। सिर, हृदय और हाथ का ऐसा संयोजन हम चाहते हैं" (विवेकानंद, 1989, खंड, 6. पृ.49)।

एक शिक्षक के रूप में स्वामी विवेकानन्द की उभरती छवि एक सांकेतिक प्रतिमान है और यह बिल्कुल स्पष्ट भाषा में शिक्षा के आधुनिक परिप्रेक्ष्य को वास्तव में सच्चे और प्रामाणिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दायरे में प्रस्तुत करती है। उनके हर शब्द और विचार में ईमानदारी की झलक दिखती है। उन्होंने आज और आने वाले समय में मानव जाति से संबंधित लगभग सभी विषयों और मुद्दों पर सशक्त प्रकाश डाला। इतिहास ने तो उन्हें रचा ही है, साथ ही उन्होंने खुद एक नया इतिहास भी रचा है. विवेकानन्द एक सर्वदा प्रेरक ग्रन्थ बन गये हैं, जिनका प्रभाव आने वाली चुनौतियों से निपटने में काम आएगा। मार्टिन लूथर की तरह विवेकानन्द ने मनुष्य को बाहरी धार्मिकता से मुक्त किया क्योंकि उन्होंने धार्मिकता को आंतरिक मनुष्य बना दिया। उसने शरीर को जंजीरों से मुक्त कर दिया क्योंकि उसने हृदय को जंजीरों से जकड़ लिया था। शिक्षा में विवेकानन्द की व्यापक दृष्टि में गुणवत्ता और उत्कृष्टता से लेकर राष्ट्रीय एकता और अंतर्राष्ट्रीय समझ, शैक्षिक अवसरों की समानता, महिला सशक्तिकरण और शिक्षकों के लिए नेतृत्व मॉडल, मूल्य शिक्षा, शांति शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता के माध्यम से जीवन-शैली प्रबंधन जैसे विविध मामले शामिल थे। और योग और इनसे स्पष्ट रूप से वर्तमान शोधकर्ता को इस परियोजना को लेने के लिए प्रेरणा मिली है।

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार पर विवेकानन्द की अंतर्दृष्टि

विवेकानन्द के अनुसार, सीखना अनिवार्य रूप से उस ज्ञान को उजागर करने की एक प्रक्रिया है जो मन, नियंत्रण और एकाग्रता के माध्यम से हमारे भीतर छिपा रहता है। - हम जो कहते हैं एक आदमी 'जानता' है, सख्त मनोवैज्ञानिक भाषा में, वही होना चाहिए जो वह 'खोजता है' या 'प्रकट' करता है; एक आदमी जो 'सीखता है' वह वास्तव में वही है जो वह अपनी आत्मा, जो अनंत ज्ञान की खान है, से पर्दा हटाकर 'खोजता' है (विवेकानंद, 1989, खंड 1, पृष्ठ 28)। उनके अनुसार शिक्षक कभी भी विद्यार्थी को शिक्षा नहीं दे सकता। शिक्षक जो कर सकता है वह सिर्फ एक अनुकूल वातावरण तैयार करना है, जिसमें शिक्षार्थी आत्म-प्रेरणा के नियमों का पालन करना सीखता है। जिसे विवेकानंद ने शिक्षा के लिए "मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण" कहा, वह वस्तुतः आधुनिक शिक्षा में अनुमानी पद्धति या खोज पद्धति है।.

मानवतावादी मनोविज्ञान पर स्वामी विवेकानन्द की प्रासंगिकता: मानवतावादी मनोविज्ञान विचारों की एक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है जो 1950 और 1960 के दशक में अमेरिका में उभरी, जिसके मुख्य प्रतिनिधि मास्लो और रोजर्स थे। इस प्रवृत्ति की मूल धारणा यह है कि सभी जीवों में आंतरिक प्रवृत्ति होती है, यानी अपनी क्षमता विकसित करना जो जीव को बनाए रखने और मजबूत करने में मदद कर सके और इस प्रकार, मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता उनकी संभावित ऊर्जा से तय होती है। शिक्षा का उद्देश्य "आत्म-स्वभाव" को बढ़ावा देना है और शिक्षा का उत्तरदायित्व एक ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमें छात्र अपना विकास स्वयं कर सकें। विवेकानन्द के कथन में, "प्रत्येक को अपने विकास के नियम के अनुसार बढ़ना चाहिए" (विवेकानन्द, 1989, खंड I, पृष्ठ 24) या, "आपको अध्ययन और चिंतन के माध्यम से आगे बढ़ना होगा, यही आपकी प्राप्ति का मार्ग है" (विवेकानंद, 1989, खंड 6, पृष्ठ 502)। विवेकानन्द के लिए विस्तार ही जीवन का एकमात्र लक्षण है जो बोध और अनुभूति की ओर ले जाता है.

स्वामी विवेकानन्द का अवचेतन मन पर दावा: विवेकानन्द ने मनोविज्ञान को विज्ञान का विज्ञान कहा था' (विवेकानन्द, 1989, खंड 4, पृष्ठ 28)। सांख्य और योग मनोविज्ञान द्वारा प्रतिपादित पारलौकिक सत्य के आधार पर, विवेकानन्द ने जोर देकर कहा: "चेतना केवल मानसिक महासागर की सतह है" (विवेकानंद, 1989, खंड I, पृष्ठ 9)। और अन्यत्र उन्होंने कहा कि हमारा चेतन मन "अवचेतन मन के शक्तिशाली महासागर में एक बूंद मात्र है" (विवेकानंद, 1989, खंड 4, पृष्ठ 28)। आधुनिक समय में मन के अवचेतन या अचेतन भाग के महत्व को फ्रायड, जंग और अन्य मनोवैज्ञानिकों ने बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में, विवेकानन्द के निधन के काफी बाद सामने लाया था।

योग शिक्षा के चश्मे से विवेकानन्द का दर्शन

हमें नैतिक बनने की शक्ति प्राप्त करनी होगी; जब तक हम ऐसा नहीं करते, हम अपने कार्यों पर नियंत्रण नहीं रख सकते। योग ही हमें नैतिकता की शिक्षाओं को व्यवहार में लाने में सक्षम बनाता है। नैतिक बनना ही योग का उद्देश्य है" (विवेकानंद, 1989, खंड 8, पृ.43)।

शब्द 'योग' की शाब्दिक धारणा से इसका अर्थ है व्यक्तिगत आत्मा का सार्वभौमिक आत्मा के साथ मिलन, सांसारिक मांस और रक्त अस्तित्व की सीमा को पार करते हुए 'पारलौकिक मैं' की सदैव शांत भूमि की ओर एक यात्रा। 'योग' शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होता है। कभी-कभी इसे 'विधि' के रूप में माना जाता है; कभी-कभी जुए के अर्थ में। उपनिषदों और भगवद-गीता की व्याख्याओं के अनुसार, आत्मा अपनी सांसारिक

और पापपूर्ण स्थिति में परमात्मा से अलग और अलग रहती है।

सभी पापों और कष्टों की जड़ अलगाव, अलगाव, अलगाव हैं और दुखों और कष्टों से छुटकारा पाने के लिए, हमें आध्यात्मिक एकीकरण, एक में दो की चेतना, या योग प्राप्त करना होगा। योग प्रणाली के पारंपरिक संस्थापक, पतंजलि ने योग को "सोच सिद्धांत के संशोधनों की समाप्ति (योगःचित्तवृत्तिनिरोधः)" के रूप में परिभाषित किया (पतंजलि के योग सूत्र, 1:2)। बाइबल के पन्नों में भी यही लय छपी है: "शांत रहो, और जानो कि मैं भगवान हूँ"। (भजन संहिता 46:10) पतंजलि के अनुसार योग पूर्णता प्राप्त करने का एक व्यवस्थित प्रभाव है और यह पूर्णता मनुष्य की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रकृति के नियंत्रण के माध्यम से होती है। योग, जैसा कि पतंजलि द्वारा परिकल्पित किया गया है, ज्ञान और गतिविधि, सिद्धांत और अभ्यास दोनों को एकीकृत करता है। पतंजलि तत्वमीमांसा और नैतिकता, अतिक्रमण और व्यापकता को जोड़ते हैं।

यह विवेकानन्द ही हैं जिन्होंने योग को व्यावहारिक दृष्टिकोण से तर्कसंगत बनाया और 'इसकी शिक्षाओं को शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान और विज्ञान के नवीनतम ज्ञान के साथ सुसंगत बनाया।' विवेकानन्द के लिए योग का अर्थ केवल एकांत स्थान नहीं है। यह किसी भी स्थान पर और किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। पतंजलि धर्म के चयनित व्यक्तियों के लिए एक स्थान प्रदान करता है, विवेकानंद आम लोगों को उनका 'घर' प्रदान करते हैं - योग दर्शन शरीर, मन और आत्मा की शुद्धि और उन्हें शाश्वत धन्य दृष्टि के लिए तैयार करने से ज्यादा कुछ नहीं है। योग, शुरुआत में, स्वास्थ्य और फिटनेस के लिए है, लेकिन आजकल लोग इसके मूल, यानी आध्यात्मिकता की ओर जा रहे हैं।

जीवन के प्रति विवेकानन्द का दृष्टिकोण पूर्ण स्वीकृति का प्रतीक है। उन्होंने जीवन की किसी भी चीज़ को अस्वीकार नहीं किया। विवेकानन्द का धर्म दर्शन न केवल सार्वभौमिक न्याय के विचार को समाहित करता है, बल्कि संपूर्ण मानवतावाद के लिए जिम्मेदारी भी प्रदान करता है, किसी बाहरी दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की आवश्यकता के रूप में। विवेकानन्द के अनुसार, आध्यात्मिकता वास्तव में मनुष्य का वह पहलू है जो उसकी क्षमताओं से संबंधित है - सब कुछ उच्चतर, दिव्य। "विज्ञान का कठोर नियम साबित करता है कि आत्मा व्यक्तिगत है और उसके भीतर पूर्णता होनी चाहिए, जिसकी प्राप्ति का अर्थ स्वतंत्रता है, मोक्ष नहीं, और व्यक्तिगत अनंत की प्राप्ति" (विवेकानंद, 1989, खंड 3, पृष्ठ 499)।

विवेकानन्द का ज्ञानमीमांसीय रुख

मानव गतिविधियों को वर्गीकृत किया जा सकता है: सत्य की खोज, ज्ञान की खोज और खुशी की खोज, जो क्रमशः आत्मा की तीन मूल प्रकृतियों - सत, चित, आनंद को दर्शाती है। इस प्रकार, ज्ञान की खोज सत्य की खोज और खुशी की खोज के बीच में है। स्वामी विवेकानन्द की ज्ञान की अवधारणा इसकी पुष्टि करती है: ज्ञान विविधता के बीच एकता खोजने के अलावा और कुछ नहीं है। प्रत्येक विज्ञान इसी पर आधारित है; समस्त मानव ज्ञान विविधता के बीच एकता की खोज पर आधारित है।" (विवेकानंद, 1989, खंड 3, पृ. 397-98)। उनका मानना है कि सभी मानव ज्ञान मानव आत्मा से आता है। मनुष्य ज्ञान की खोज करता है और उसे प्रकट करता है, जो अनंत काल से पहले से विद्यमान है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ज्ञान की तीन मुख्य अवस्थाएँ हैं। पहले चरण में, हर चीज़ एक-दूसरे से भिन्न दिखाई देती है, उनका कोई संबंध

नहीं होता। दूसरे चरण में, बारीकी से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि कुछ भी असमान नहीं है; सभी एक-दूसरे से संबंधित हैं, परस्पर निर्भर हैं। अंतिम चरण में बिना किसी भेदभाव के सब कुछ एक जैसा दिखता है। तो, ज्ञान पूर्ण विविधता से पूर्ण एकता तक, पदार्थ से आत्मा तक, धर्मनिरपेक्ष से आध्यात्मिक तक एक मानसिक यात्रा है। विवेकानन्द ने प्रतिपादित किया है कि समस्त मानव ज्ञान अनुभव से उत्पन्न होता है; हम अनुभव के अलावा कुछ भी नहीं जान सकते। इस प्रकार, ज्ञान एक मॉडल है जिसे हम अपने अनुभव को अर्थ और संरचना देने के लिए अपने भीतर बनाते हैं। हम सोचते हैं कि यह अवधारणा रचनावाद की आधुनिक अवधारणा को शुरू करने के लिए आशावादी रूप से प्रज्वलित करती है।

ज्ञान के सिद्धांत को समझाने के लिए, विवेकानन्द ने इसके एकमात्र स्रोत के रूप में कारण के कांतियन विचार को खारिज कर दिया। विवेकानन्द ने दृढ़तापूर्वक कहा कि कान्त के कहने का कारण और कुछ नहीं बल्कि ज्ञान के एकमात्र स्रोत के रूप में तर्क को स्वीकार करना है। जब विवेकानन्द अपने राजयोग में मनुष्य की पूर्णता की खोज पर बोलते हैं, तो वे कहते हैं; -कैंट ने बिना किसी संदेह के साबित कर दिया है कि हम तर्क नामक विशाल मृत दीवार को भेद नहीं सकते। लेकिन यह पहला विचार है जिस पर सभी भारतीय विचार अपना रुख अपनाते हैं, और तर्क से भी अधिक कुछ खोजने का साहस करते हैं और खोजने में सफल होते हैं।" (विवेकानंद, 1989, खंड 1, पृष्ठ 199)। तो, विवेकानन्द की ज्ञान मीमांसा इस विचार पर आधारित है कि मन की एक अवस्था होती है जो तर्क से परे होती है।

1896 में न्यूयॉर्क में एक भाषण देते समय, विवेकानन्द का मानना था कि धर्म सभी तर्कों से परे है, और बुद्धि के स्तर पर नहीं है। अपने भक्ति-योग में, विवेकानन्द मन की एक ऐसी स्थिति के बारे में कहते हैं जो 'कारणों के धुंधले और अशांत क्षेत्रों से परे' है। विवेकानन्द के अनुसार ज्ञान के तीन साधन हैं- वृत्ति, तर्क और प्रेरणा। उनका मानना था कि तर्क उच्चतम ज्ञान को नहीं छोड़ सकता, यह एक अहसास है, अधिग्रहण नहीं। -... जब आवरण धीरे-धीरे हटाया जा रहा है, तो हम कहते हैं, 'हम सीख रहे हैं' और ज्ञान की प्रगति उजागर करने की इस प्रक्रिया के आगे बढ़ने से होती है" (विवेकानंद, 1989, खंड 1, पृष्ठ 28)). यह संज्ञानात्मक रचनावाद का एक उदाहरण हो सकता है। विवेकानन्द के लिए ज्ञान ही विज्ञान है। यह न तो कारण है, न अंतर्ज्ञान, न ही वृत्ति; यह सर्व-ज्ञान है जो इंद्रियों के हमारे जीवन से परे है। —... हमारा सारा ज्ञान, चाहे हम इसे धारणा कहें, या कारण, या वृत्ति, उस एक चैनल के माध्यम से आना चाहिए जिसे अनुभव कहा जाता है‖ (विवेकानंद, 1989, खंड 1, पृ. 240-241) । चूँकि अनुभव एक व्यक्तिगत निर्माण है और साथ ही यह एक सामाजिक निर्माण भी है।

आधुनिक नेतृत्व की अवधारणा

विवेकानन्द ने बार-बार और बिना किसी त्रुटि के निदान किया कि दुनिया की मूल कमी आर्थिक' सांस्कृतिक या राजनीतिक नहीं' बल्कि मनुष्य की अच्छाई है' और उन्होंने सही तर्क दिया है कि किसी संगठन की सफलता मुख्य रूप से उसके संवैधानिक कानूनों और समझौतों पर नहीं बल्कि ईमानदारी पर निर्भर करती है। आत्म-बलिदान' और इसके व्यक्तिगत सदस्यों का उत्साह। विवेकानन्द के लिए' सभी के लिए पूरे दिल से प्यार के साथ संयुक्त एक शुद्ध पारदर्शी दिमाग' आदर्श नेतृत्व का आधार है। विवेकानन्द की नेतृत्व शैली की एक अन्य प्रमुख विशेषता निम्न स्व या अपरिपक्व अहंकार का उन्मूलन है।

कॉर्पोरेट जगत में पेश किए जाने से अस्सी साल पहले विवेकानन्द ने अपने जीवन में और अपने संगठन के भीतर सेवक-नेतृत्व की उत्कृष्ट अवधारणा का प्रचार और अभ्यास किया था और आधुनिक समय में नेतृत्व अवधारणा की सबसे शक्तिशाली कला के रूप में प्रशंसित किया गया था। "आपको पूरे आंदोलन की कमान संभालनी होगी' एक नेता के रूप में नहीं' बल्कि एक सेवक के रूप में"। (विवेकानंद' 1989, खंड 5, पृ.41), विवेकानन्द ने देखा। शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक नेतृत्व प्रतिमान के संदर्भ में' एक प्रभावी शिक्षक की भूमिका लेन-देन के साथ-साथ परिवर्तनकारी नेतृत्व शैलियों को आत्मसात करने की होगी' जो न केवल शैक्षणिक और समस्या निवारण प्रवचन तक ही सीमित रहेंगे' बल्कि जो प्रेरित करेंगे' एक साझा निर्माण करेंगे। शिक्षार्थियों में रचनात्मक आवेग. एक सफल नेता बनने के लिए व्यक्ति को अपने आप को समुदाय के पैरों तले कुचलना होगा। विवेकानन्द मानवता के समक्ष उभरती समस्याओं को समझते थे। यह कारण और प्रभाव विधि है जिसके द्वारा उन्होंने समस्याओं का पता लगाया और समाधान प्रदान किये।

उपसंहार

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दार्शनिक विचारों का अध्ययन करते समय हमें उनके महत्वपूर्ण संदेशों का गहन ज्ञान प्राप्त होता है। उन्होंने शिक्षा को सिर्फ ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं माना, बल्कि उन्होंने उसे एक जीवन मूल्य और सामाजिक सुधार का माध्यम भी बनाया। विवेकानंद के द्वारा दिए गए शिक्षा दर्शन शिक्षा को एक समृद्ध, आत्मनिर्भर और समर्थ समाज के रूप में देखते हैं। उनके विचारों में योगदान का मुख्य आधार व्यक्तिगत विकास और समाजिक समानता पर ध्यान देना था। उनके शैक्षिक दार्शनिक विचारों का अध्ययन हमें यह दिखाता है कि शिक्षा का माध्यम बस ज्ञान प्राप्ति तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि यह एक व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास और समृद्ध समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दार्शनिक विचारों का अध्ययन करने से हमें शिक्षा के क्षेत्र में उनके विचारों को आधुनिकता के साथ जोड़ने और समाज में समर्थ नागरिकों के निर्माण के लिए नए मार्ग प्राप्त होते हैं।

सन्दर्भ

1. रूबी, डॉ. (2023) । स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण और भारतीय शिक्षा प्रणाली। एप्लाइड रिसर्च के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 9. 242-245. 10.22271/allresearch.2023.v9.i2d.10619.
2. रॉय, स्मृतिकाण. (2023) । शिक्षा पर पश्चिमी और भारतीय दृष्टिकोण: ब्रिटिश औपनिवेशिक काल पर एक अध्ययन। अनुसंधान प्रकाशन और समीक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 4. 668-671. 10.55248/gengpi.234.5.39040.
3. बिस्वास, हुमायूं. (2023) । स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के पथप्रदर्शक थे। 2. 102-105.
4. गोराईं, शिशुपाल। (2023) । विवेकानन्द के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य और वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में प्रासंगिकता।
5. भारद्वाज, निशा और डी., प्रदीप। (2023) । स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार और उनकी भविष्योन्मुख प्रासंगिकता - एक अध्ययन। प्रबंधन, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 67-82. 10.47992/आईजेएमटीएस.2581.6012.0289।
6. सिंह, अजित, सक्सैना, राहुल, सक्सेना, सुयश। (2023) । स्वामी विवेकानन्द एक महान भारतीय शिक्षक। ईपीआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एंड बिजनेस रिव्यू। 10. 2.
7. , डोयेल, सरकार, चिरंजीत, मित्रा, सौमिता। (2021) । स्वामीजी: शानदार सूत्रधार और आदर्श दार्शनिक। 10.13140/आरजी.2.2.34353.56160।
8. महाराज, अयोन. (2020) । शिवज्ञाने जीवेर सेवा: श्री रामकृष्ण के प्रकाश में स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदांत का पुनर्परीक्षण। धर्म अध्ययन जर्नल. 2. 10.1007/s42240-019-00046-x.
9. दत्ता, सुभादीप। (2019) । शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द का आत्मनिरीक्षण: 24 परगना, पश्चिम बंगाल, भारत पर आधारित एक अध्ययन। प्रारंभिक बचपन शिक्षा में उभरते मुद्दों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 1. 111-120. 10.31098/इजीस। v1i2.35.
10. शांति, डॉ. (2019) । शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण। 6. 598-602.
11. सिंह, मायेंगबाम। (2018) । स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में जाति पर पुनः विचार। दलित की

समसामयिक आवाज. 10. 2455328X1774462. 10.1177/2455328X17744628।

12. वाल्मिकी, अमिता. (2018) । भविष्य की भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए गांधी, विवेकानन्द और टैगोर के शिक्षा दर्शन पर पुनर्विचार: एक संभावना! भविष्य की मानव छवि। 10. 103-111. 10.29202/fhi/10/11.
13. मदाइओ, जेम्स। (2017) । नव-वेदांत पर पुनर्विचार: स्वामी विवेकानंद और अद्वैत वेदांत की चयनात्मक इतिहासलेखन1। धर्म. 8. 101. 10.3390/rel8060101.
14. रॉय, स्मृतिकाण वायल्डर, गेरिट, ओपडेबीक, हेंड्रिक। (2016) । यूरोप में नैतिक नेतृत्व और प्रबंधन के लिए प्रेरणा के रूप में भारतीय आध्यात्मिक परंपराएँ। 10.1057/978-1-137-60194-0_6.
15. बिस्वास, राखीबृता। (2015) । स्वामी विवेकानन्द द्वारा परिकल्पित शिक्षा की प्रक्रिया के माध्यम से मनुष्य के विकास में ध्यान का महत्व और ध्यान के साथ मस्तिष्क का अंतर्संबंध: एक आत्मनिरीक्षण। 341-349.